शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

गुजरात के ब्रजभाषा साहित्य में राष्ट्रीय एकीकरण एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का पल्लवन

डॉ० नीरू राजकुमारी

एसोसियेट प्राफेसर, हिन्दी विभाग, डी०ए-वी० कॉलेज, कानपुर

www.shodh.net

गुजरात के ब्रजभाषा साहित्य में राष्ट्रीय एकीकरण एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का पल्लवन

डॉ० नीरू राजकुमारी

राष्ट्रीय एकीकरण का सबसे महत्त्वपूर्ण और आवश्यक तत्त्व भाषा है जिसके माध्यम से सम्पूर्ण राष्ट्र एकता के अन्त:सूत्र में आबद्ध रहता है। भारतीय वाङ्मय के आदिकाल में राष्ट्रीय एकीकरण की भूमिका संस्कृत ने निभायी थी किन्तु आज भारत के विशाल भूभाग में अनेक क्षेत्रीय एवं प्रादेशिक भाषाएँ अस्तित्व ग्रहण कर चुकी हैं और उनके द्वारा प्रस्तुत सौन्दर्य- बोध, जीवन पद्धति, चिन्तन दृष्टि, रागात्मिका-वृत्ति ने पूरे राष्ट्र को एकात्मता के सूत्र में बाँधे रखा है।

प्रस्तुत लघु शोध परियोजना के चयन में राष्ट्रीय एकता के मध्ययुगीन संदर्भ और वर्तमान समय में उनकी त्रासद स्थिति पर विचार किया गया है। शौरसेनी अपभ्रंश से उद्भूत ब्रज भाषा मध्यकाल में राष्ट्रीय एकता का प्रबल प्रतिमान रही है किन्तु उसकी मानसपुत्री हिन्दी क्षुद्र राजीतिक कारणों से उपेक्षिता होती जा रही है।

भाषा और संस्कृति अन्योन्याश्रित हैं। संस्कृति से भाषा का जन्म होता है और संस्कृति के सम्पूर्ण प्रदेय की संवाहिका का कार्य भाषा करती है। हिन्दी साहित्य के मध्यकाल में ब्रजभाषा ने अखिल भारतीय स्तर पर यह कार्य सम्पन्न किया था। ब्रजभाषा ने ब्रज-संस्कृति को देश के कोने-कोने तक पहुँचाया था। भारतीय जातीय जीवन और चेतना की अभिव्यक्ति ब्रजभाषा द्वारा हुई थी। इसका एक मात्र कारण इस भाषा की अन्तर्निहित शक्ति है जो कि माधुर्य और मार्दव से ओत प्रोत है। संस्कृति का सम्बन्ध मनुष्यमात्र से होता है किन्तु स्थानभेद से उसके स्वरूप में परिवर्तन होता रहता है। भक्ति आन्दोलन के राष्ट्रव्यापी प्रभाव की छत्रछाया में ब्रज-संस्कृति पूरे भारत में अपने भाषागत एवं कलागत वैशिष्ट्य के कारण प्रसारित हो गयी थी किन्तु गुजरात का सम्बन्ध कृष्ण से होने के कारण गुजराती जनजीवन में ब्रजभाषा व ब्रज संस्कृति के प्रति अतीव श्रद्धा का भाव रहा है और इसका प्रसार सुदूर सौराष्ट्र व काठियाबाड़ के अन्दरूनी क्षेत्रों तक हो गया था।

असम, बंगाल, उड़ीसा, पंजाब, महाराष्ट्र तथा हिन्दी भाषी क्षेत्रों के ही समानान्तर भारत के पश्चिमांचल में बसे गुजरात में वि0 सं0 1554 (भालण कवि) से लेकर वि0 सं0 1909 (दयाराम भाई) तक लगभग साढ़े चार सौ से भी अधिक ब्रजभाषा कवियों ने माँ भारती के चरणों में अवना निमल्यि चढ़ाकर हिन्दी की अभूतपूर्व सेवा की है। किन्तु इन सभी कवियों की यह विशेषता है कि ये विभिन्न सम्प्रदायों यथा वैष्णव, जैन, स्वामिनारायण, सूफी, निर्गुण सन्त आदि से जुड़े होने के अतिरिक्त राजा, राज्याश्रित, चारण कवि तथा सम्प्रदाय निरपेक्ष हैं और विप्रगामी परिस्थितियों में जीवन यापन करते हुये इन्होंने भावात्मक ऐक्य को बनाए रखा है तथा समाज को विभेदकारी विवर्तनों से भी मुक्त किया है। ब्रजभाषा और ब्रज संस्कृति का गुजराती जन समाज में इतना व्यापक प्रभाव था कि सुदूर कच्छ क्षेत्र के भुज में लगभग दो सौ वर्षों तक ब्रजभाषा पाठशाला का महाराव लखपति सिंह (1707) द्वारा संचालन हुआ और बाद में जैन कवि कनक कुशल द्वारा इस कार्य को आगे बढ़ाया गया। यहाँ ब्रजभाषा और उसकी काव्यशास्त्रीय दीक्षा प्राप्त कर कविगण अपने प्रातिभ ज्ञान का विकास करते थे। इस कालखण्ड में वहाँ दो सौ से भी अधिक बावनी ग्रन्थों की रचना हुई जो कि ब्रजभाषा साहित्य सम्पदा व उसकी विकास परम्परा की अमूल्य धरोहर है।

गुजरात के समग्र ब्रजभाषा साहित्य की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि इन सभी साहित्यकारों ने जाति, कुल, धर्म व साम्प्रदायिक भेदभाव को दूर कर इनकी निस्सारता का बोध कराते हुए वहाँ के सामाजिक जीवन को मानवता के उच्चतम धरातल पर अवस्थित किया और समदृष्टि, सत्याचरण, दया, प्रेम, अहिंसा की शुद्ध विचारधारा के द्वारा सामाजिक समरसता के उन्नयन में अपना योगदान दिया। इनकी व्यापक और उदारवादी दृष्टि के कारण गुजरात के सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में आनन्द की ऐसी रसधारा प्रवाहित हुई जिसमें पूरा गुजरात डूबा रहा। इससे वहाँ लोक-रंजनकारी शक्तियाँ भी उदित हुई जिनके प्रश्रय में विभिन्न लोककलाएँ पूर्णोत्कर्ष को प्राप्त हुई।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol. 1, Issue 2, 15 July, 2010

गुजरात के ब्रजभाषा साहित्य में राष्ट्रीय एकीकरण एवं सांस्कृतिक परिदृश्य का पल्लवन

डॉ० नीरू राजकुमारी

एसोसियेट प्राफेसर, हिन्दी विभाग, डी०ए-वी० कॉलेज, कानपुर

www.shodh.net

लोक जीवन में रंजकता का कार्य ललित कलाएँ करती हैं। गुजरात के जन समाज में ब्रजभाषा के समानान्तर ब्रज संस्कृति ने स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, काष्ठकला, पाककला, पुष्प सज्जा, आभूषण निर्माण, संगीत एवं नृत्य आदि कला के विभिन्न क्षेत्रों में ब्रज की लोक कलाओं का सर्वोत्तमगुण सार्वजनीनता, सर्वजन अधिगम्यता और सहजता से ओत-प्रोत किया। इससे कलाओं को पूर्णोत्कर्ष प्राप्त हुआ। इसके साथ ही गुजराती समाज धनोपार्जन हेतु जब विदेश गया तो वह इन कलाओं को अपने साथ लेता गया इससे अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर इनके प्रदर्शन से विदेशी भी आनन्द की रस गंगा में सराबोर हुए। आध्यात्मिक पृष्ठभूमि से जुड़ी होने के कारण आनन्द प्राप्ति इन सभी कलाओं का इष्ट था क्योंकि ब्रज संस्कृति के मुख्य केन्द्र राधा और कृष्ण हैं। इस प्रकार गुजरात के ब्रजभाषा साहित्य और संस्कृति ने व्यापक फलक पर लोकरंजकता का कार्य करके भारतीय जनसमाज को अपने प्रभामण्डल से आलोकित किया। यह इस साहित्य की चरमोपलब्धि है। इससे रागात्मिका वृत्तियों में औदात्य की भावनाओं को बल प्राप्त हुआ। इसका मूल्यांकन इस तथ्य को दृष्टिगत करते हुए ही किया जा सकता है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN